तपस्वी मूर्त बनो

01. तपस्वी अर्थात् सदा बाप की लगन में मगन। लव में लीन अर्थात् लवलीन। अर्थात् प्रेम के सागर में समाए हुए। ज्ञान, आनन्द, सुख, शान्ति, प्रेम के सागर में समाये हुए को ही तपस्वी मूर्त कहते हैं। तो अभी इसी अनुभवों में समा जाओ।

02. तपस्या अर्थात् एक बाप के याद की लगन में मगन होना। विशेष मन-बुद्धि की एकाग्रता से अव्यक्त वतन की सैर करो। चलते-फिरते, भोजन करते, कर्म करते भी एक बाप की याद में बिजी रहना। एक बाप के साथ में भोजन स्वीकार करना यह भी तपस्या है।

03. जैसे ब्रह्मा बाप के संस्कारों में, हर संकल्प में यही रहा कि बेहद का कल्याण कैसे हो! ऐसे बेहद की कल्याण भावना रख तपस्वी मूर्त बनो। हर सेकेण्ड "तपस्या-स्वरूप, तपस्वी-मूर्त"। ब्रह्मा बाप समान अपनी मूर्त और सूरत से "त्याग, तपस्या और सेवा" साकार रूप में प्रत्यक्ष करो।

04. हरेक यही संकल्प लो कि हमें सुख- शान्ति की, शक्ति की किरणें विश्व में फैलानी हैं। तपस्वी मूर्त बनकर रहना है। एक दूसरे को वाणी से सावधान करने के बजाए अब मन्सा शुभ भावना से एक दूसरे के सहयोगी बनकर आगे बढ़ो और बढ़ाओ।

05. जैसे स्थूल अग्नि वा प्रकाश अथवा गर्मी दूर से ही दिखाई देती वा अनुभव होती है, वैसे आपकी त्याग और तपस्या की झलक दूर से ही आकर्षित करे। हर कर्म में "त्याग और तपस्या" प्रत्यक्ष दिखाई दे तब ही सेवा में सफलता पा सकेंगे।

06. तपस्वी सितारा, आपके मस्तक अर्थात् बुद्धि की स्मृति वा दृष्टि से आत्मिक स्वरूप ही दिखाई दे। भ्रकुटी के बीच में जैसे दिव्य सितारा चमक रहा है। हर आत्मा के प्रति कल्याण का संकल्प वा भावना रहे। दूसरी कोई भी भावना उत्पन्न न हो।

07. जैसे तपस्वी एक आसन पर बैठते हैं, ऐसे आप भी "एकरस अन्तिम स्थिति के आसन" पर विराजमान होकर बाप को याद करो, तपस्या करो। आपकी हर कर्मेन्द्रिय से देह-अभिमान का त्याग और आत्म-अभिमानी की तपस्या स्थिति प्रत्यक्ष रूप में दिखाई दे।

08. अपने तपस्वी स्वरूप द्वारा अपने रहे हुए विकर्मों को भस्म करो। साथ-साथ हर आत्मा के तमोगुणी संस्कारों और प्रकृति के तमोगुण को भस्म करने के लिए सकाश देने की सेवा करो। जैसे चित्रों में शंकर को तपस्वी-रूप में दिखाते हैं, ऐसे एकरस स्थिति के आसन पर स्थित होकर अपना तपस्वी-रूप प्रत्यक्ष दिखाओ।

09. तपस्वी को वृक्ष के नीचे बैठकर तपस्या करते दिखाते हैं। आप भी इस 'सृष्टिरूपी कल्पवृक्ष' के नीचे जड़ में बैठकर तपस्या कर रहे हो। वृक्ष के नीचे बैठने से सारे वृक्ष की नॉलेज बुद्धि में आ जाती है। तो नॉलेजफुल बनकर सारे कल्पवृक्ष को सर्व शक्तियों का जल दो।

10. जैसे पहले-पहले नशा रहता था कि हम इस वृक्ष के ऊपर बैठकर सारे वृक्ष को देख रहे हैं। ऐसे परमधाम की ऊंची स्थिति में बैठकर नीचे पूरे ग्लोब को सकाश देने की सेवा करो। इससे तपस्या और सेवा दोनों कम्बाइन्ड रूप में, और एक साथ होती रहेंगी।

11. समय की समीपता प्रमाण अभी सच्चे तपस्वी बनो। आपकी सच्ची तपस्या वा साधना है ही बेहद का वैराग्य, बेहद का त्याग। अभी बेहद के वैराग्य वृत्ति द्वारा चारों ओर तपस्या का वायुमण्डल बनाओ। आपकी तपस्या मन्सा सेवा के निमित्त बनें।

12. तपस्वी मूर्त का अर्थ है- तपस्या द्वारा शान्ति और शक्ति की किरणें चारों ओर फैलती हुई अनुभव में आयें। यह तपस्वी स्वरुप औरों को देने का स्वरुप है। जैसे सूर्य विश्व को रोशनी की और अनेक विनाशी प्राप्तियों की अनुभूति कराता है। ऐसे महान तपस्वी आत्मायें, मास्टर ज्ञान सूर्य बन शक्तिशाली किरणों की अनुभूति कराओ।

13. अभी ज्वालामुखी तपस्वी मूर्त बन आसुरी संस्कार और स्वभाव सब भस्म करो। जैसे देवियों के यादगार में दिखाते हैं कि ज्वाला से असुरों का संघार किया। यह आपकी ज्वाला-स्वरूप स्थिति का यादगार है। अब ऐसी योग की ज्वाला प्रज्वलित करो। जिसमें यह कलियुगी संसार जलकर भस्म हो जाये।

14. जैसे दु:खी आत्माओं के मन में यह आवाज शुरु हुआ है कि अब विनाश हो। वैसे ही आप विश्व कल्याणकारी आत्माओं के मन में यह संकल्प उत्पन्न हो कि अब जल्दी ही सर्व का कल्याण हो तब ही समाप्ति होगी। इसके लिए तपस्वी स्वरूप में स्थित हो अपनी शुभ-वृत्ति द्वारा कल्याणकारी किरणें चारों ओर फैलाओ।

15. जैसे सूर्य की किरणें फैलती हैं, वैसे ही तपस्वी मूर्त बन मास्टर सर्वशक्तिवान् की स्टेज पर स्थित हो सर्व शक्तियों व विशेषताओं रूपी किरणें चारों ओर फैलती हुई अनुभव करो। "मैं मास्टर सर्वशक्तिवान, विघ्न-विनाशक आत्मा हूँ", इस स्वमान के स्मृति की सीट पर स्थित हो जाओ।

16. अब ज्वाला-रुप बनने का दृढ़ संकल्प लो और संगठित रूप में मन-बुद्धि की एकाग्रता द्वारा पावरफुल तपस्या के वायब्रेशन चारों ओर फैलाओ। अन्दर यह धुन सदा रहे कि अब वापिस घर जाना है। जाना है अर्थात् सर्व सम्बन्धों से, प्रकृति की आकर्षण से उपराम अर्थात् साक्षी बन जाओ।

17. तपस्वी स्वरूप के आसन पर बैठ अपनी श्रेष्ठ शान, रुहानी शान की स्थिति में स्थित हो अब लोगों को परेशान करने वाली परिस्थिति को समाप्त करो। अपनी शान से परेशान आत्माओं को शान्ति और चैन का वरदान दो। लाइट-हाउस और माइट-हाउस स्थिति को समझते हुए, उसी स्वरूप में स्थित हो जाओ।

18. विशेष ज्ञान स्वरूप स्थिति में स्थित हो याद की यात्रा को पॉवरफुल बनाओ। अपनी शुभ वृत्ति, कल्याण की वृत्ति और शक्तिशाली वातावरण द्वारा अनेक तड़पती हुई, भटकती हुई, पुकार करने वाली आत्माओं को आनन्द, शान्ति और शक्ति की अनुभूति कराओ।

19. अब संगठित रूप में ज्वाला स्वरूप याद का अभ्यास करो। एक-एक चैतन्य लाइट हाउस बनकर बैठो। सेवाधारी हो, स्नेही हो, एक बल एक भरोसे वाले हो, यह तो सब ठीक है। लेकिन अभी मास्टर सर्वशक्तिवान की स्टेज, स्टेज पर लाओ। तपस्वी मूर्त बनो।

20. जैसे किले में प्रजा सेफ रहती है। एक राजा के लिए कोठरी नहीं बनाते, किला बनाते हैं। आप सभी भी स्वयं के लिए, साथियों के लिए, अन्य आत्माओं के लिए ज्वाला रूप याद का किला बनाओ। ऐसे अपने तपस्वी स्वरूप द्वारा याद को ज्वाला रूप शक्तिशाली बनाओ जो हर आत्मा उसके सेफ्टी का अनुभव करे।

21. ज्वाला स्वरूप याद द्वारा पाप-कटेश्वर वा पाप-हरनी बनो। आपकी याद ऐसी शक्तिशाली तपस्वी स्वरूप की हो जो अनेक आत्माओं की निर्बलता दूर हो जाए। इसके लिए हर सेकण्ड, हर श्वांस बाप और आप कम्बाइन्ड होकर रहो। स्नेह और शक्ति दोनों रूप कम्बाइन्ड हो।

22. अभी निर्भय, ज्वालामुखी बन अपने तपस्वी स्वरूप द्वारा प्रकृति और आत्माओं के अन्दर जो तमोगुण है उसे भस्म करो। तपस्या अर्थात् ज्वाला स्वरूप याद। इस याद द्वारा ही माया वा प्रकृति का विकराल रूप शीतल होगा। आपका तीसरा नेत्र, ज्वालामुखी नेत्र माया को शक्तिहीन कर देगा।

23. तपस्वी मूर्त बनने के लिए मन और बुद्धि दोनों को पावरफुल ब्रेक दो। साथ-साथ संकल्पों को मोड़ने की शक्ति धारण कर लो। जिससे बुद्धि की शक्ति वा कोई भी एनर्जी वेस्ट ना होकर जमा होती जाये। इसके लिए विशेष समेटने की शक्ति धारण करो।

24. अपने तपस्वी रूप द्वारा, योग अग्नि द्वारा इस पुराने वृक्ष को भस्म करने वा परिवर्तन करने का संकल्प लो। इसके लिए संगठित रूप में फुलफोर्स से योग ज्वाला प्रज्वलित करो। एकरस स्थिति के आसन पर एकाग्रचित होकर बैठो। एक बाप की याद में समा जाओ।

25. समीपता के समय प्रमाण अब अपने तपस्वी स्वरूप द्वारा चारों ओर सकाश देने का, वायब्रेशन देने वा फैलाने का, मन्सा द्वारा वायुमण्डल बनाने का कार्य करो। अब इसी सेवा की आवश्यकता है क्योंकि समय बहुत-बहुत नाज़ुक आ रहा है।

26. तपस्वी स्वरूप में बैठ अपनी उड़ती कला द्वारा फरिश्ता बन चारों ओर चक्कर लगाओ। जिसको शान्ति चाहिए, खुशी चाहिए, सन्तुष्टता चाहिए, फरिश्ते रूप में उन्हें अनुभूति कराओ। वह अनुभव करें कि इन फरिश्तों द्वारा शान्ति, शक्ति, खुशी मिल गई।

27. अन्त:वाहक अर्थात् अन्तिम स्थिति, पावरफुल स्थिति जो आपका अन्तिम वाहन है। अपने उस स्वरूप को सामने इमर्ज कर तीनों लोकों की सैर करो। अपने रहमदिल तपस्वी स्वरूप से परेशान आत्माओं को सर्व शक्तियों की सकाश दो।

28. इस देह की दुनिया में कुछ भी होता रहे, लेकिन आप साक्षी हो सब पार्ट देखते अपने तपस्वी स्वरूप द्वारा सकाश देते रहो। ऊंची स्टेज पर स्थित होकर सकाश देना। तो किसी भी प्रकार के वातावरण का सेक नहीं आयेगा।

29. जैसे बाप अव्यक्त वतन, एक स्थान पर बैठे चारों ओर के विश्व के बच्चों की पालना कर रहे हैं। ऐसे आप भी एक स्थान पर बैठकर अपने तपस्वी स्वरूप द्वारा बाप समान बेहद की सेवा करो। बेहद में सकाश दो। बेहद की सेवा में अपने को बिजी करो।

30. आप ब्राह्मण आदि रत्न विशेष इस वृक्ष के तना हो। तने से सबको सकाश पहुंचती है। तो अपने तपस्वी स्वरूप द्वारा कमजोरों को बल दो। अपने पुरुषार्थ का समय दूसरों को सहयोग देने में लगाओ। अभी ऐसी लहर फैलाओ "देना है, देना है, देना ही देना है"।

31. त्यागी और तपस्वी अर्थात् अनुभवी राजऋषि। "राज" अर्थात् अधिकारी और "ऋषि" अर्थात् सर्व त्यागी। ब्राह्मण जीवन में प्रत्यक्ष स्वरूप "अधिकारी और त्यागी" दोनों का बैलेन्स हो। स्वराज्य अधिकारी भी पूरा हो और महात्यागी भी पूरा हो।

32. ज्ञान मनन के साथ शुभ भावना, शुभ कामना के संकल्प, सकाश देने का अभ्यास, यह मन के मौन का या ट्रैफिक कन्ट्रोल का समय मुकरर करो। विशेष एकान्तवासी और खजानों के एकॉनामी का प्रोग्राम बनाओ। अपने तपस्वी स्वरूप द्वारा सेवा करो।

33. स्व-उन्नति करनी है तो "क्वेश्चन, करेक्शन और कोटेशन" का त्याग कर बाप से अपना कनेक्शन ठीक रखो। सच्चा तपस्वी वह है जो सदा सर्वस्व त्यागी की पोजीशन में रहता है। सर्वश त्यागी वह है जो पुराने स्वभाव संस्कार के वंश का भी त्याग करता है। सर्वन्श त्यागी अर्थात् सदा गुण मूर्त।

34. नम्बरवन त्याग का एक्जैम्पुल ब्रह्मा बाप बना। श्रेष्ठ त्याग उसको कहा जाता, जो सब कुछ प्राप्त होते हुए त्याग करे। शुरू से ही तन, मन, धन, सम्बन्ध, सर्व प्राप्ति होते हुए त्याग किया। सब साधन होते हुए स्वयं पुराने में ही रहे। साधना में अटल रहे।

35. स्व-परिवर्तन के लिए हद को सर्व वंश सहित समाप्त करो। जिसको भी देखो वा जो भी आपको देखे- बेहद के तपस्वी का नशा अनुभव हो। सेवा भी हो, सेन्टर्स भी हों लेकिन हद का नाम निशान न हो तब कहेंगे तपस्वी मूर्त फरिश्ते।

36. त्याग का भाग्य समाप्त करने वाला पुराना स्वभाव-संस्कार है, इसलिए इसका भी त्याग करो। निर्भयता और नम्रता ही योगी व ज्ञानी आत्मा का स्वरूप है। सच्चे राजऋषि वह हैं जिनका संकल्प मात्र भी कहाँ पर लगाव नही है।

37. कठिनाईयों को पार करने से ताकत आती है इसलिए उनसे घबराओ मत। योग ज्वाला प्रज्वलित करो। ब्रह्मा बाप ने बच्चों को निमित्त भव का वरदान दे विल किया। ब्रह्मा बाप समान त्याग, तपस्या और सेवा का वायब्रेशन विश्व में फैलाओ।

38. जैसे ब्रह्मा बाप के त्याग, तपस्या, सेवा का फल आप सब बच्चों को मिल रहा है। ऐसे हर एक बच्चा अपने त्याग, तपस्या और सेवा का वायब्रेशन विश्व में फैलाये। मन-बुद्धि की एकाग्रता की शक्तियों द्वारा ही वायुमण्डल बना सकते हो।

39. बाप द्वारा प्राप्त हुए सभी खजानों पर योग का प्रयोग करो। समय और संकल्प श्रेष्ठ खजाने हैं। खजानों का खर्च कम हो और प्राप्ति अधिक हो यही है प्रयोग। कम समय, कम संकल्प में रिजल्ट ज्यादा हो तब कहेंगे "योग का प्रयोग करने वाले सफल तपस्वी"।

40. जैसे साइन्स का बल अपना प्रभाव प्रत्यक्ष रूप में दिखा रहा है, ऐसे साइन्स की भी रचयिता साइलेन्स बल है। साइलेन्स बल को अभी प्रत्यक्ष दिखाने का समय है। साइलेन्स बल का वायब्रेशन तीव्रगति से फैलाने का साधन है "मन-बुद्धि की एकाग्रता"।

41. एकाग्रता का आधार अन्तर्मुखता है। विशेष अटेन्शन दो- सहजयोगी ब्राह्मणों के साइलेन्स की शक्ति, रहमदिल भावना द्वारा वा संकल्प द्वारा हलचल को परिवर्तन करना ही है। मधुबन तपस्वी भूमि समान परिवर्तन का, सहजयोग का वायुमण्डल बनाओ।

42. नदी सदा सागर में समा जाती है। तो आप सागर में समा जाओ अर्थात् लवलीन हो जाओ। शान से लवलीन स्थिति में सदा बैठे रहो। नीचे ऊपर नहीं आओ। आवागमन का चक्कर तो अब पूरा किया ना! अभी चलो लवलीन हो जाओ, आराम से शान से बैठ जाओ।

43. पुराने सृष्टिरूपी वृक्ष के परिवर्तन के समय, वृक्ष के ऊपर मास्टर बीजरूप स्थिति में स्थित हो जाओ। बीज है ही 'बिन्दु'। "सारा ज्ञान, गुण, शक्तियाँ सबका सिन्धु व बिन्दु में समा जाता है" इसको ही कहा जाता है बाप समान स्थिति। बाप सिन्धु होते भी बिन्दु है। ऐसे मास्टर बीजरूप स्थिति में सदा स्थित रहो।

44. जैसे ब्राह्मण जीवन में शारीरिक आकर्षण व शारीरिक टचिंग अपवित्रता है, ऐसे मन-बुद्धि में किसी विकार के संकल्प मात्र की आकर्षण व टचिंग अपवित्रता है। तो किसी भी बुराई को संकल्प में भी टच न करना यही सम्पूर्ण वैष्णव व सफल तपस्वी की निशानी है।

45. पांच विकार लोगों के लिए जहरीले सांप हैं। योगी तपस्वी आत्मा के लिए ये सांप गले की माला बन जाते हैं। आप ब्राह्मणों के और ब्रह्मा बाप के अशरीरी, तपस्वी शंकर स्वरूप के यादगार में सांपों की माला गले में दिखाते हैं। सांप आपके लिए खुशी में नाचने की स्टेज बन जाते हैं। जब विकारों पर इतनी विजय हो तब कहेंगे सच्चे तपस्वी।

46. जो अन्तर्मुखी हैं, वे अन्दर ही अन्दर सूक्ष्म शक्ति की लीलाओं का अनुभव करते हैं। आत्माओं का आह्वान करना, रूहरिहान करना, संस्कार स्वभाव को परिवर्तन करना, बाप से कनेक्शन जुड़वाना- ऐसे रूहों की दुनिया में रूहानी सेवा करने के लिए एकाग्रता की शक्ति को बढ़ाओ।

47. तपस्या के चार्ट में अपने को सर्टीफिकेट देने वाले तो बहुत हैं लेकिन सर्व की सन्तुष्टता का सर्टीफिकेट तभी प्राप्त होता है जब दिल की तपस्या हो, सर्व के प्रति दिल का प्यार हो, निमित्त भाव और शुभ भाव हो। ऐसे बच्चे सर्व की दुआओं के अधिकारी बन जाते हैं।

48. तपस्या के इस समय को अमूल्य समझकर सफल करो। जैसे बापदादा का हर कर्म स्व के प्रति और अनेकों के प्रति भाग्य की लकीर खीचने वाला रहा, ऐसे ही बाप समान बनो। आपके कर्म, आपकी स्थिति ब्रह्मा बाप को स्पष्ट दिखायें। यह है सच्चे तपस्वी की निशानी।

49. अपने को शान्तिधाम के निवासी समझो। ऊंच ते ऊंच शान्तिधाम, सुखधाम की याद में रहो। तुम शान्ति (साइलेन्स) के टॉवर हो, टॉवर ऑफ सुख हो। जो टॉवर में रहने वाला ऊंच ते ऊंच बाप है, वह शिक्षा देते हैं कि मुझे याद करो तो शान्ति के टॉवर में आ जायेंगे। यह तपस्या करो।

50. आदि पिता ब्रह्मा बाप के समान बनने के लिए शक्ति, शान्ति और सर्वगुणों के टॉवर (स्तम्भ) बनो। ब्रह्मा बाप समान अव्यक्त फरिश्ता बन कर्मयोगी का पार्ट बजाओ। हे आदि रत्नों, आदि पिता ब्रह्मा बाप समान सदा निराकारी, निर्विकारी, निरहंकारी रहना।

।। समाप्त ।।